Edu Junior
Where Passion Meets Educations

LEARN KWNIY
Where passion meets with educations

हिंदी

व्याकरण

learnkwniy

अध्याय

संधि

संधि

संधि की परिभाषा

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास - पास आने के कारण उनके मेल से जो विकार होता है , उसे संधि कहते हैं ।

अन्य शब्दों में कहे तो

दो वर्णों या ध्वनियों के संयोग से होने वाले विकार (परिवर्तन) को सन्धि कहते हैं। सन्धि करते समय कभी-कभी एक अक्षर में, कभी-कभी दोनों अक्षरों में परिवर्तन होता है और कभी-कभी दोनों अक्षरों के स्थान पर एक तीसरा अक्षर बन जाता है। इस सन्धि पद्धति द्वारा भी शब्द-रचना होती है;

learnkwniy

उदहारण

सम् + तोष = संतोष ;

देव + इंद्र = देवेंद्र ;

भानु + उदय = भानूदय।

संधि के तीन भेद हैं -

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि।

स्वर सन्धि

दो स्वरों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं;

अन्य शब्दों में कहे तो

स्वर संधि में दो स्वरों का मेल होता है;

जैसे :-

परम + अर्थ = परमार्थ (अ + अ = आ)

हिम + आलय = हिमालय (अ + आ = आ)

कवि + इच्छा = कवीच्छा (इ + इ = ई)

सु + उक्ति = सूक्ति (उ + उ = ऊ)

learnkwniy

स्वर-संधि पाँच प्रकार की होती हैं

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण संधि
5. अयादि संधि

1. दीर्घ संधि

दीर्घ सन्धि सवर्ण ह्रस्व या दीर्घ स्वरों के मिलने से उनके स्थान में सवर्ण दीर्घ स्वर हो जाता है। वर्गों का संयोग चाहे ह्रस्व + ह्रस्व हो या ह्रस्व + दीर्घ और चाहे दीर्घ + दीर्घ हो, यदि सवर्ण स्वर है तो दीर्घ हो जाएगा। इस सन्धि को दीर्घ सन्धि कहते हैं

जैसे

चरण + अनुसार = क्रमानुसार

दश + आनन = दशानन

यति + इंद्र = यतीन्द्र

नदी + ईश = नदीश

भू + ऊर्जा = भूर्जा

learnkwniy

2. गुण संधि

इसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए ; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं।

जैसे

अ + ई = ए ; नर + ईश= नरेश

आ + ई = ए - रमा + ईश = रमेश

अ + ऋ = अर् - देव + ऋषि = देवर्षि

आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

3. वृधि संधि

अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं।

जैसे

learnkwniy

अ + ए = ऐ - पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा

आ + ए = ऐ = सदा + एव = सदैव

अ + ओ = औ - जल + ओकस = जलौकस

अ + औ = औ परम + औषध = परमौषध

4. यण संधि

- इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है।
- उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है।

- ‘ऋ’ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को ‘र्’ हो जाता है। इन्हें यण-संधि कहते हैं।

जैसे

इ + अ = या = यदि + अप = यद्यपि

उ + अ = व् - सु + आगत = स्वागत

ऋ + अ = र् + आ ; पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

5. अयादि संधि

learnkwniy

ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

जैसे

ए + अ = आय ने + अन = नयन

ऐ + अ = आय् - नै + अक = नायक

ओ + अ = अव् + अ ; पो + अन = पवन

औ + अ = आव् - पौ + अक = पावक

व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

जैसे

दिक् + अम्बर = दिगम्बर

वाक् + ईश = वागीश

जगत् + ईश = जगदीश

उत् + नति = उन्नति

learnkwniy

विसर्ग संधि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के संयोग से जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

जैसे-

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

निः + आहार = निराहार

निः + छल = निश्छल

अन्तः + करण = अन्तःकरण

मनः + विकार = मनोविकार

learnkwniy